

शहरों के लिए COP-28 का क्या मतलब है?

द हिंदू

पेपर- III (पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी)

दुबई में पार्टियों के 28वें सम्मेलन (सीओपी-28) को कुछ लोगों ने मिश्रित बैग बताया है। भले ही यह जीवाश्म ईंधन को समाप्त करने का कोई गहन बयान नहीं दे सका, लेकिन कम से कम एक चर्चा तो शुरू हुई। कुछ महत्वाकांक्षी प्रतिनिधियों ने इसे "जीवाश्म ईंधन के युग के अंत की शुरुआत" के रूप में वर्णित किया। वैश्विक तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखने और ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन को कम करने के पेरिस जलवायु सौदों पर ग्लोबल स्टॉक टेकिंग (जीएसटी) के कारण यह एक महत्वपूर्ण सीओपी था। इसी तरह, लॉस एंज डैमेज फंड को भी मंजूरी दे दी गई। इसलिए, शमन और अनुकूलन दोनों रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

शहरों के बारे में क्या चर्चा हुई?

जब 1995 में संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसी) ने सीओपी की शुरुआत की, तो 44% लोग शहरों में रहते थे। वर्तमान में, वैश्विक आबादी का 55% शहरी है और 2050 तक इसके 68% तक पहुंचने की उम्मीद है। शहरी दुनिया आज लगभग 75% प्राथमिक ऊर्जा की खपत करती है और लगभग 70% CO₂ (कुल जीएचजी का 76%) उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार है। इसलिए, शहरी मुद्दों को संबोधित किए बिना पेरिस प्रतिबद्धताओं के वांछित परिणाम संभव नहीं हैं।

इस वर्ष के सीओपी में, शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन पर मंत्रिस्तरीय बैठक के लिए समर्पित एक विशेष दिन था। इस बैठक में आवास, शहरी विकास, पर्यावरण वित्त और अन्य विभागों के मंत्री बुलाए गए; स्थानीय और क्षेत्रीय नेता, वित्तीय संस्थान, गैर-सरकारी संगठन; और अन्य हितधारक। इस तरह के कदमों ने शहर के कुछ प्रतिनिधियों और नागरिक समाज संगठनों (सीएसओ) को अपनी आवाज उठाने और सिद्धांत पर जोर देने के लिए मजबूर किया - "हमारे बिना हमारे लिए कुछ भी नहीं"। यह सीओपी की वित्तीय और शासन संरचना को फिर से परिभाषित करने का मूल बिंदु बताता है। शहर के प्रतिनिधि बहु-स्तरीय ग्रीन डील प्रशासन और ऊर्जा और जलवायु कार्रवाई के शासन और विनियमन को संशोधित करने के लिए बहस कर रहे हैं। इसी तरह, कुछ यूरोपीय शहर समूह शहरों में सीधी कार्रवाई की दृढ़ता से वकालत कर रहे हैं।

COP-28 के लिए मेयर के प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख सदस्य, ENVE के अध्यक्ष और वारसों के मेयर रफाल ट्रज़ास्कोव्स्की ने वैश्विक जलवायु परिवर्तन वार्ता में उपराष्ट्रीय सरकारों की भूमिका को औपचारिक रूप से पहचानने, शासन के सभी स्तरों पर काम करके जलवायु कार्रवाई में तेजी लाने और बढ़ाने के लिए तर्क दिया। क्षेत्र, और शहरों और क्षेत्रों को प्रत्यक्ष वित्तपोषण और तकनीकी सहायता प्रदान करना। इसके लिए 'आउट ऑफ द बॉक्स' कल्पना की आवश्यकता होगी क्योंकि इसका मतलब संघीय सरकारों के अधिकारियों का उल्लंघन होगा। फिर भी, विवादास्पद मुद्दा यह है कि शहर और क्षेत्र जलवायु महत्वाकांक्षा को आगे बढ़ाने और हरित रोजगार पैदा करने, वायु प्रदूषण को कम करने और मानव स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार करने में प्रमुख अभिनेता हैं। सीओपी निर्णय दस्तावेजों में शहर सरकारों के प्रयासों को औपचारिक रूप से मान्यता दी जानी चाहिए।

ग्लोबल साउथ में क्या किया जा सकता है?

ग्लोबल साउथ के शहर अपने पश्चिमी समकक्षों की तुलना में कहीं अधिक असुरक्षित हैं। शहर के नेताओं को शायद ही सशक्त किया गया है, प्रमुख रोजगार अनौपचारिक क्षेत्र में है, अनुकूलन महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकांश शहर जलवायु प्रेरित आपदाओं के प्रति संवेदनशील हैं और शहरों में निवेश आकर्षित करने के लिए दबाए गए अभियान ने अमीर और गरीबों के बीच

अंतर को और अधिक बढ़ा दिया है। अधिकांश देशों में, और विशेष रूप से भारत में, 40% शहरी आबादी मलिन बस्तियों में रहती है। प्रदूषण जीवन प्रत्याशा को कम करने में एक प्रमुख योगदानकर्ता है और सामाजिक और आर्थिक असमानताएं उनकी प्रणालियों में काफी अंतर्निहित हैं। इसलिए, जलवायु कार्य योजनाओं में निष्पक्ष भागीदारी सुनिश्चित करने और नुकसान और क्षति मुआवजे आदि का दावा करने के लिए, शहरों को नियंत्रित करने वाली प्रक्रियाओं में आमूल-चूल बदलाव करना होगा। प्रगति हासिल करने का एक तरीका, भले ही वह बहुत कम हो, इन शहरों का जलवायु एटलस बनाना, उनका मानचित्रण करना और हॉटस्पॉट की पहचान करना हो सकता है। यहां, सीओपी के परिणाम सहित मौजूदा वित्तीय वास्तुकला से एक प्रमुख सहायता प्रणाली की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) और राष्ट्रीय अनुकूलन योजनाओं की तैयारी के दौरान, शहर खुद को जलवायु कार्य योजनाओं की प्रक्रिया से बाहर पाते हैं। इस प्रक्रिया में शहर के नेताओं और नागरिक समाज समूहों का शायद ही कोई प्रतिनिधित्व है। इसलिए, सीओपी में और संबंधित देशों में उनके आयोजन के दौरान स्थान पुनः प्राप्त करना समानांतर रूप से होना चाहिए।

यह इस तथ्य को खारिज नहीं करता है कि चेन्नई जैसे कुछ शहर अपनी जलवायु कार्य योजना का नेतृत्व कर रहे हैं और उन्होंने 2050 तक अपने शून्य उत्सर्जन लक्ष्य को पूरा करने का फैसला किया है, यहां तक कि भारतीय राष्ट्रीय सरकार की 2070 की निर्धारित समय अवधि से पहले भी। हालांकि यह बहुत महत्वाकांक्षी लग सकता है, लेकिन यह योग्य है मुद्दा यह है कि जलवायु कार्य योजनाओं को पूरा करने में स्थान पुनः प्राप्त करने में शहर सबसे आगे हैं और इसलिए उन्हें शमन और अनुकूलनीय रणनीतियों दोनों की योजना बनाने में उचित हिस्सा मिलना चाहिए। जैसा कि कई लोग कहते हैं, COP-28 एक नम्र व्यंग्य हो सकता है, तथापि, इसने जलवायु कार्रवाई, सामाजिक न्याय और शहरी दुनिया की भूमिका के अंतर्संबंधों, अन्योन्याश्रितताओं और अंतर्संबंधों को स्वीकार करने के महत्वपूर्ण प्रश्न को सामने ला दिया है।

प्रारंभिक परीक्षा संभावित प्रश्न (Prelims Expected Question)

प्रश्न : जलवायु परिवर्तन में शहरों की भूमिका के संदर्भ में निम्न लिखित कथनों पर विचार करें-

1. दुनिया भर के शहर आज लगभग 75% प्राथमिक ऊर्जा की खपत करती है।
2. दुनिया भर के शहर लगभग 70% कार्बन डाई आक्साइड के उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न ही 1 और न ही 2

Que. Consider the following statements with reference to the role of cities in climate change-

1. Cities around the world today consume about 75% of primary energy.
2. Cities around the world are responsible for approximately 70% of carbon dioxide emissions.

Which of the statements given above is/are correct?

- (a) Only 1
- (b) Only 2
- (c) Both 1 & 2
- (d) Neither 1 nor 2

उत्तर : C

संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न: जलवायु परिवर्तन से निपटने के संबंध में शहर किस प्रकार महत्वपूर्ण हैं? जलवायु कार्रवाई में शहरों की भूमिका पर कॉप -28 के निष्कर्षों की चर्चा कीजिए।

उत्तर का दृष्टिकोण :

- उत्तर के पहले भाग में जलवायु परिवर्तन से निपटने के संबंध में शहरों की भूमिका चर्चा करें।
- दूसरे भाग में शहरों की जलवायु परिवर्तन से निपटने के संबंध में भूमिका पर कॉप -28 के निष्कर्षों की चर्चा कीजिए।
- अंत में सुझाव देते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।